Quadrant II - Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (T.Y.B.A)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC 109

Paper Title: 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र'

Unit: बिम्ब, प्रतीक, मिथक

Module Name: 'बिंब- भाग 1'

Module No: 15

Name of the Presenter: Mr. Salim Mohamed Gaded

बिंब : परिभाषा एवं स्वरूप

बिंब अँग्रेजी के image शब्द का रूपान्तरण है।। समान्यतया 'बिंब' या 'इमेज' शब्द का अर्थ है किसी पदार्थ को मूर्त रूप प्रदान करना, चित्रबद्ध करना, मानसी प्रतिकृति उतरना। बिंब एक प्रकार का भावगर्भित शब्द चित्र है। यह केवल हमारे चक्षु-इंद्रिय को ही तृप्त नहीं करता अपितु इंद्रिय सुख प्रदान करता है। यह मूल रूप से भावनाओं को आक्रांत करने का काम करता है। पाश्चात्य काव्यशास्त्री 'इमेजरी' (imagry) का प्रयोग अलंकार विधान के अर्थ में भी करते हैं। भारतीय काव्यशास्त्र में बिंब की योजना रही ज़रूर है किन्तु पाश्चात्य जगत में इसका व्यापक विवेचन हुआ है। बिंब का प्रयोग काव्य में अधिक हुआ है। वस्तु से मिलती-जुलती किसी दूसरी वस्तु को उसके प्रतिनिधि के रूप में इस तरह से प्रस्तुत किया जा सकता है कि श्रोता या पाठक के समक्ष उसका मानस चित्र प्रत्यक्ष हो जाए। इसी क्रिया को बिंब विधान या मानसी प्रतिकृति कहा जाता है।

काव्य में बिंब का महत्वपूर्ण स्थान है। कवि कर्म समग्रत: बिंब विधान ही है। कवि मन में जो भाव या विचार को सँजोए रखता है वे मुखतः अप्रत्यक्ष, अमूर्त या अप्रकट होते हैं। उसी रूप में उनको

प्रस्तुत करना असंभव होता है कवि अपनी भावनाओं को पाठकों तक ज्यों का त्यों पहुँचने के लिए बिंब की सहायता लेता है।

भारतीय काव्यशास्त्र में बिम्ब को काव्य के नए तत्व के रूप में विवेचन नहीं किया गया है बल्कि रूपक आदि अलंकारों के अंतर्गत विवेचन प्रमुख है , किन्तु पाश्चात्य साहित्य चिंतन में बिम्ब काव्य के अनिवार्यतम अंग के रूप में प्रतिष्ठित है। बिम्ब के चिंतन में परिभाषाएँ उल्लेखनीय है – सबसे पहले बिम्ब के महत्व को समझने का प्रयत्न कॉलरिज ने किया है, उनके शब्दों में

" They become proofs of the original genius only as far as they are modified by a predominant passion"

आर.एल ब्रेट कहते हैं " अधिकांश दूसरे शब्दों की तरह बिम्ब एवं बिम्ब-विधान जैसे शब्दों का भी अनेक अर्थों में प्रयोग किया जाता है। आज सामान्यतया इनका अभिप्राय भाषा के ऐसे प्रयोग से है जो अमूर्तताओं के बजाय मूर्त विशिष्टताओं पर निर्भर होता है।"

अर्थात ब्रेटे के अनुसार बिम्ब के सफल प्रयोग के लिए भाषा महत्वपूर्ण होती है जो विचारों एवं भावों को अमूर्त रूप में वर्णन न करके मूर्त रूप में प्रस्तुत करती है। दरअसल बिम्ब एक वर्णन नहीं अपितु चित्रण है। काव्य के अतिरिक्त अन्य सभी अनुशासन वर्णन होते हैं इन सब में भाव या विचार अमूर्त रूप में प्रस्तुत किए जा सकते हैं और किसी न किसी प्रकार से यह मस्तिष्क तक पहुँच भी जाते हैं। किन्तु काव्य अन्य विधाओं से अलग है जहां केवल भाव प्रमुख रखता है। भाषा यहाँ बिम्ब के माध्यम से सफल होती है। उदाहरणार्थ 'मैं क्रोध में हूँ' यह एक सामान्य तथा अमूर्त कथन है जो मनःस्थिति को प्रस्तुत करता है। अगर कोई 'मैं उसे कच्चा चबा जाऊंगा' कहता है तो इसमे क्रोध अमूर्त नहीं बल्कि मूर्त रूप में चित्रित रहता है।

प्रसिद्ध समीक्षक टी ई हुल्मे भी बिम्ब को परिभाषित करते वक़्त इन बातों का समर्थन करते है। उनके शब्दों में "Image in verse are not mere decoration but the essence of an intuitive language" (बिम्ब काव्य में अलंकरण का साधन मात्र नहीं है, अपितु वह भावात्मक भाषा का सारतत्व है)

रूसी विचारक मिखाइल के अनुसार – "Art is incapable of renouncing imagery because imagery is its very soul, its essence, its main characteristic." (कला बिम्ब विधान की उपेक्षा नहीं कर सकती, क्योंकि बिम्ब उसकी आत्मा, उसका सारतत्व उल्लेखनीय गुण है।)

रूसी विद्वान का यह कथन काव्य में बिम्ब की अनिवार्यता का प्रमाण है। आगे वे लेनिन के कथन से अपने परिभाषा को जोड़ते हुए कहते हैं कि हमारी संवेदना या चेतना बाह्य जगत का बिम्ब मात्र है और

यह स्पष्ट है कि बिम्ब का अस्तित्व उस पदार्थ के बिना असंभव है जिसका वह बिम्ब है। साथ ही वह यह भी स्पष्ट करते हैं कि पदार्थ का अस्तित्व उसके बिम्ब से सर्वथा स्वतंत्र है।

लेविस भी बिम्ब को काव्य का अपरिवर्तनीय तत्व मानते हैं - ... the image is the constant in al poetry …metaphor remains the life-priciple of poetry, the poet's chief test and glory"

इन सबको ध्यान में रखते हुये भारतीय चिंतन और इतिहासकार डॉ. नगेंद्र भारतीय काव्य में बिम्ब को महत्वपूर्ण मानते हुए अलग अस्तित्व स्वीकारते हैं। इनकी परिभाषा कॉलरिज के कथन से मिलती हुई नज़र आती है। नगेंद्र के शब्दों में " बिम्ब पदार्थ नहीं वरन उसकी प्रति छवि है। यहाँ मूल सृष्टि नहीं पुनर्सृष्टि है। बिम्ब एक ऐसा चित्र है जो किसी पदार्थ के साथ विभिन्न इंद्रियों के सन्निकर्ष से फरमाता के चित में उद्बुद्ध होता हैं। .... सामान्य बिम्ब और काव्य-बिम्ब में यह भेद है कि इसका निर्माण सक्रिय या सर्जनात्मक कल्पना से है और इसके मूल में राग की प्रेरणा अनिवार्यतः रहती है। काव्य बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानसी छवि है जिसके मूल में भावों की प्रेरणा निहित होती है।"

बिंब निर्माण में पहली स्थिति है कवि और वर्ण्य-वस्तु का तादाकार हो जाना और इस तादाकारिता के लिए कवि में वस्तुनिष्ठता, एंद्रिय-बोध और भावोद्रेक के साथ-साथ कल्पना शक्ति का होना आवश्यक है। सादृश्य तथा तुलना के तत्व बिंब -विधान के लिए महत्वपूर्ण है, पर यह अनिवार्य नहीं कि वस्तुगत मूर्त या स्थूल की तुलना वस्तुगत, मूर्त अथवा स्थूल से ही की जाए। इनका विपर्यय भी हो सकता है। श्रेष्ठ बिंबों के द्वारा मूर्त को भाव रूप और भाव को मूर्त रूप दिया जाता है।

बिंब-विधान संवेग-संकुल प्रयास होता है। कलाकार विविध विपरीत वस्तुओं, मन:स्थितियों और और धारणाओं को अपनी कल्पना से परस्पर मिलाकर एक नवीन संदर्भ अथवा अनुक्रम देता है, उनमें अनेक मार्मिक छवियों का आधान करता है।

बिंब की सफलता सहृदय -चित्त में संवेदनों को उदबुद्ध करने की क्षमता पर निर्भर करती है और इसके लिए कवि उन्हें चित्र-धर्मी तो बनाता ही है , अपने हृदय के रस और संवेग से आप्लावित कर देता है।

इन सबमें कल्पना का महत्वपूर्ण योगदान है वह मुख्य रूप से दो काम करती है -पहले स्मृति के क्रोड में सोते हुये बिंबों को को प्रत्याक्षोपलब्ध अनुभूतियों के स्पर्श से जगाती है और फिर उन बिंबों को शिल्प के साचे में ढालती है , उन्हें मधुमय और कलात्मक बना देती है।

बिम्ब विधान के आवश्यक तत्व – वस्तुनिष्ठता, एंद्रियबोध भावोद्रेक, स्मृति कल्पनाशक्ति, संवेग-सकुलता एवं भाषा पर अधिकार।

बिम्ब का मुख्य कार्य कलाकार और प्रमाता के बीच सम्प्रेषण करना या संबंध स्थापित करना है। वह विषय, भाव, कवि की अनुभूति से पाठक की संवेदना को जगाता है। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए बिम्ब में प्रत्यग्रता, तीव्र घनता, उद्बोधनशीलता, ताज़गी, विषयानुकूलता आदि गुण होने चाहिए। प्रत्यग्रता वह गुण है जो रंगन्यास, स्वर के आरोह-अवरोह या पद-लालित्य के सहारे बिम्ब में जीवन सत्य भरती है।

तीव्र घनता से बिम्ब छोटे फलक पर अधिकतम अर्थवत्ता के केन्द्रीकरण की शक्ति अर्जित करता है, कम से कम शब्दों के द्वारा एक सघन और विराट अनुभूति को व्यक्त करता है।

उद्बोधनशीलता वह शक्ति है जिसके द्वारा बिम्ब कृति के भावावेग के प्रति सहृदय के चित्त की प्रत्यर्थता को उद्बुद्ध कर सके।

ताजगी से अभिप्राय है कि बिम्ब भाषा, शैली, सामाग्री की नवीनता द्वारा ऐसे भाव का उदघाटन करे जिससे हम पहले परिचित नहीं थे। बदलता हुआ जीवन जीवन के नए संदर्भ नयी सभ्यता, आचरण की नए रूप विचार-जगत में आनेवाले नए तत्व नए बिंबों की मांग करते हैं।